Written by मेरी बटिया संवाददाता
Monday, 11 June 2018 14:31

: □□□□ □□□□ □□□□□□ □□ □□□ □□□□ □□□□ □□□□ □□□□□□□ □□□□□□□□ □□ □□ □□□ □□□ □□□□□□ □□ □□□□□□ : □□□ □□□□□□ □□ □□□□□ □□□ □□□, □□ □□□□□□□ □□, □□□□□ □□ : □□□□□ □□□□□□ □□ □□□□□ □□ □□□ □□□□□□□ □□ □□□□□□□□ □□ □□ □□□ □□□ □□□□□□ □□ □□□□□□□ :

□□□□ □□□□□□ □□□□□□□□□

□□□□ : आप अगर लखनऊ जैसे महानगर में रहने वाले □क शांतपूर्वक रहने वाले व्□यक्ति हैं, तो फिर आपको इस मवाली गुण्□डा के बारे में जानकारी रखनी ही चाहि□ होगी□ यही वे लोग हैं जो आम आदमी का जीना हराम कर देते हैं□ किसी भी आम शहरी पर किसी माफिया अपराधी के गिरोह की तरह वे टूट पड़ सकते हैं□ आपके घर में धड़धड़ाते हु□ घुस जा सकते हैं, आपके घर मौजूद बच्□चों और महिलाओं के साथ किसी भी सीमा तक अभद्रता कर सकते हैं□ धमकी दे सकते हैं, किसी की भी इज्□जत को पूरे मोहल्□ले में तहस-नहस कर सकते हैं□ ऐलान कर सकते हैं कि तुम्□हें कोई भी नहीं बचा सकता है अब□

इससे कोई फर्क नहीं पड़ता है कि वे गुण्□डे सड़कछाप हैं, या गिरोहबंद□ इससे भी कोई फर्क नहीं पड़ता कि वे यूपी पुलिस की □सटी□फ के कारकून हैं जिन्□हें यूपी पुलिस अपने गर्व बताती घूमती है□ उस जब पुलिस और □स टी □फ के लोग इस तरह क़ानून तोड़ने वाले, अराजक और अपराधी क़िस्म के मित्रों और रिश्तेदारों की मदद में आम जीवन जीने वालों का जीना हराम करने के लि□ बिना किसी सक्षम अधिकारी की अनुमति लि□, बिना किसी असाइनमेंट के गुंडों की तरह कहीं भी हमला करने लगेंगे तो हम जैसे आम और साधारण लोगों का जीवन कभी भी संकट में पड़ सकता है□ चिंतनीय बात तो यह कि जब □सटी□फ के पुलिसवाले लखनऊ में ऐसी गुण्□डागर्दी कर सकते हैं, तो वे यूपी के बाकी जिलों में क्□या-क्□या कहर नहीं ढाते होंगे□

यह धमकी दी है यूपी □सटी□फ के □क दारोगा रणजीत राय ने, आज दैनिक जन संदेश टाइम्□स अखबार के प्रधान सम्□पादक सुभाष राय को रणजीत ने करीब दर्जन भर पुलिसवालों के घर धमक कर पूरे मोहल्□ले को आतंकित कर दिया□ इस बारे में पूरा ब्□योरा सुभाष राय ने अपनी वाल पर दर्ज कर दिया है:-

'अब तुम किसी पुलिस वाले को, किसी दरोग़ा को, □स पी को, जिसको चाहो बुला लो. देखता हूँ तुम्हारी औक़ात क्या है. ये देखने से ही गुंडा लगता है, पत्रकार है, गुंडई करता है. अब बता कौन आ□गा तुझे बचाने, बोल कौन है बुला. नम्बर दे मैं बुलाता हूँ,' □क गुस्साया हुआ आदमी दर्जन भर लोगों के साथ रविवार शाम तीन से चार के बीच मेरे विराज खंड स्थित आवास पर आ धमका. तब मैं और मेरी पत्नी केवल हम दो ही घर पर थे. उनमें से कई हथियारों से लैस थे. वे सब धड़ाधड़ रैम्प फलाँगते हु□ मेरे दरवाज़े के अंदर आ ग□. चीख़ते, चिल्लाते और अभद्र भाषा का इस्तेमाल करते हु□. हमलावर अन्दाज़. □क झटके में डरा देने की कोशिश. हम अवाक थे. लगा कि वह किसी भी क्षण मुझे थप्पड़ जड़ देगा, मेरी पत्नी पर हमले कर देगा.

Written by मेरी बटियिा संवाददाता
Monday, 11 June 2018 14:31

मैं □क्कारगी डर गया लेकिन अपने डर से बाहर आते हु□ मैंने उससे क्हा, आप बाहर जाइ□, दरवाज़े से हटि□, मैं आप से बात नहीं कर रहा हूँ. वह खौखयिाते हु□ बोला, तुम्हें मुझसे बात करनी पड़ेगी, क्यों नहीं बात करेगा? बोल कौन पुलसिवाला है जो तुम्हारी मदद करेगा. बुला, फ़ोन कर. मैंने पूछा, आप हैं कौन? वह मुझे डपटते हु□ चीख़ा, मैं □स टी □फसे हूँ, रणजीत राय. क्या उखाड़ लेगा. लग रहा था कि वह कभी भी मुझे घसीट लेगा, मार देगा. उसकी भाषा में खसियिाहट, उग्रता, आक्रामक्ता और गंदगी भरी हुई थी. चल्लिाते हु□ उसकेहाथ बलिकुल मेरे सरि केपास तकलहरा रहे थे. मेरी पत्नी डर गयीं थीं, वे मुझे अंदर खींचने का प्रयास कर रहीं थीं. मैं जतिना पीछे हट रहा था, वह उतना आगे बढ़ रहा था. लगभग आधे घंटे तकवह और उसकेमवाली साथी मेरे घर पर हंगामा करते रहे.

मुझे नहीं पता कि कोई भी □स टी □फवाला इस तरह सादी वर्दी में कैसे कसिी भी आम नागरकिके डरा-धमका सक्ता है. मुझे यह भी नहीं पता कि वह कसिी असाइनमेंट पर था या अपने अधकिारियों को सूचति करकेआया था या नजिी तौर पर ही अपने रश्तिेदारों, मत्रिों की ग़ैरक़ानूनी मदद करने आया था. इस तरह कसिी फ़ोर्स का कोई आदमी रंगबाज़ी और सरासर गुंडई की मुद्रा में कसिी सभ्य नागरकिकेघर धावा बोलकर केवल □स टी □फकी छवि को ही बट्टा लगा□गा और उसने ऐसा ही कयिा.

मामला क्या था, यह बताऊँ तो आप आसानी से समझ जा□ंगे कि कसि तरह पुलसि संगठनों केकुछ लोग अपने पद की धौंस दखिाकर क़ानून का दायरा लाँघते हु□ अपने अराजक, रंगबाज़ और दलाल सम्बन्धयिों की मदद कर रहे हैं. मैं और मेरी पत्नी, दोनों □कजून को बाहर चले ग□ थे, जब आठ की रात दो बजे वापस लौटे तो यह देखकर सन्न रह ग□ कि कसिी ने घर केसामने कई ट्रकमोरंग इस तरह गरिवा दयिा था कि मैं अपनी गाड़ी बाहर नहीं नकिल सक्ता था. पता करने पर मालूम हुआ कि मोरंग मस्टिर राकेश तवािरी ने डलवाया था. अगले दनि नौ को मैंने उनसे क्हा कि भाई घर केसामने से सरि्फ़इतना मोरंग हटा लें कि मैं गाड़ी नकिल सकूँ और कार्यालय जा सकूँ, उसने क्हा, जी बलिकुल अभी करवा दूँगा. जब दस बज गया और कोई हलचल नहीं हुई तो मेरी पत्नी उसकेघर गयीं और वही आग्रह दुहराया. राकेश और उसकी पत्नी दोनों ने आश्वस्त कयिा की बहुत जल्द वे मोरंग हटा लेंगे पर शाम तककुछ नहीं हुआ. मैं कार्यालय नहीं जा सका और हम अपने घर में लगभग क़ैद हो ग□. मेरे पास अपने हर काम केलि□ पैदल नकिलने केअलावा कोई और चारा नहीं बचा. मेरे लि□ इस उम्र में यह सम्भव नहीं था.

शाम को मैंने राकेश तवािरी से क्हा कि आप यहाँ से मोरंग हटा लें अन्यथा मुझे क़ानून की मदद लेनी पड़ेगी. पहले तो वह सामान्य ढंग से बात करता रहा और क्हता रहा कि अब आप ही बताइ□ इसे क्हाँ ले जाऊँ. मैं जानता हूँ कि आप को तक्लीफ़हो रही है लेकनि मेरे पास कोई और चारा नहीं है. वह मेरी मुश्कलि समझने को क्तई तैयार नहीं था. बात करते -करते अचानकउसकी भोंहें तन गयीं और भाषा बदल गयी. वैसे भी वह मुहल्ले में अकारण लोगों से झगड़ता रहता है. वह बंदूक़भी रखता है. वह ग़ुस्से में बोला, अब मोरंग यहीं रहेगा, आप को जो उखाड़ना हो, उखाड़ लीजि□. मजबूरन मुझे 100 पर पुलसि को ख़बर करनी पड़ी. पुलसि आती, इसकेपहले तवािरी ने अपने कुछ लोगों बुला लयिा. वे आ□, मेरी घंटी बजायी और धमकाने वाली भाषा में बात करने की कोशशि की. मैंने कसिी से बात करने से इनकार कयिा और दरवाज़ा बंद करकेघर में चला गया. मैंने पुलसि केउच्च अधकिारियों को भी सूचना दे दी थी. रात आठ बजे केआस-पास □कपुलसि अधकिारी आ□, उन्होंने सब देखा, राकेश तवािरी को बुलवाया और उनसे क्हा, आप इस तरह सड़कबंद नहीं कर सक्ते. क्ल सुबह जे सी बी मंगवाइ□ और यहाँ से मोरंग हटवाइ□. तवािरी ने सहमतजितायी और पुलसि अफ़सर को आश्वस्त कयिा कि सवेरे काम हो जा□गा.

अगला दनि 10 जून. सवेरा हुआ. दस बजा, बारह बजा. सब ख़ामोश. वहाँ □कचुटयिावाला आदमी तवािरी का काम करा रहा था. मैंने उससे क्हा तो उसने रूखा जवाब दयिा, अभी सुबह नहीं हुई है, कर रहे हैं, कर देंगे. हटा देंगे, ज़्यादा हाइपर न होई□. दोपहर गुज़र गयी मगर उनकी सुबह नहीं आयी. मैंने फरि पुलसि अधकिारी से सम्पर्क कयिा तो पता चला कि मस्टिर तवािरी को जे सी बी नहीं मलि पा रही है. मैंने क्हा कि अगर मैं जे सी बी मँगवा दूँ तो..अधकिारी ने क्हा, आप को मलि जाय तो मँगा लीजि□ और जब जे सी बी आ जा□ तो मुझे फ़ोन कर दीजि□गा, मैं फ़ोर्स भेज दूँगा, आप मोरंग हटवा दीजि□गा. मैंने जे सी बी मंगा ली. उसकेआते ही मस्टिर तवािरी आ□, उन्होंने मुझे बताया कि खाली प्लॉट में डलवा दीजि□. मैंने उनको बताया कि इसे तीन हज़ार रुप□ भी देने हैं. मस्टिर तवािरी ने क्हा, कोई बात नहीं, हो जा□गा. मुझे लगा, समस्या हल हो गयी लेकनि जे सी बी ने अभी □कतहिाई भी मोरंग नहीं उठायी होगी कि तवािरी की पत्नी आकर मशीन केसामने खड़ी हो गयी और गाली देने लगी, चल्लिाने लगी. तवािरी केतेवर भी अचानकबदल ग□, वह भी अनाप-शनाप बोलने लगा. जे सी बी वाला डर कर भाग गया.मैंने सुना, तवािरी की पत्नी ने कसिी को फ़ोन कयिा और कुछ ही पलों में □कगाड़ी से दनदनाते हु□ □कदर्जन

Written by मेरी बटिया संवाददाता
Monday, 11 June 2018 14:31

हथियारबंद लोग आ ग□. आते ही उन्होंने मेरे घर पर धावा बोल दिया, गरियाते हु□, औक़ात पूछते हु□ और धमकाते हु□. शोर सुनकर मेरे □कपत्रकार साथी भी आ□, उन्होंने हस्तक्षेप करने की कोशिश की लेकिन हमलावर किसी की कुछ भी सुनने को तैयार नहीं थे. इस बीच मैंने पुलिस अधिकारी को कई बार फ़ोन करने की कोशिश की मगर नाकाम रहा. उनका जब तक फ़ोन आया, तब तक मिस्टर तिवारी के बुलावे पर आ□ लोगों ने मुझे, मेरी पत्नी को झुकाने, डराने, धमकाने और मैनहैंडलिंग के हर सम्भव जतन कर लि□. जब हम नहीं डरे तो वे सब बाहर निकलकर खड़े हो ग□ और तिवारी दम्पती चीख़-चीख़ कर चुनौती देने लगे, अब जिसे बुलाना हो बुला लो और □कइंच भी मोरंग हटवा कर दिखा दो.

मैं पसोपेश में था. समझ में नहीं आ रहा था क्या क□ं. इसी बीच पुलिस अधिकारी का फ़ोन आया. मैंने उन्हें सारी बात बतायी, अपमानजनक घटना का पूरा ब्योरा दिया. तब तक मेरे मित्र अरुण सिंह और रामबाबू भी आ ग□ थे. आधे घंटे बाद पुलिस आयी. जे सी बी बुलाने की बहुत कोशिश हुई पर वह भाग चुका था, मिला नहीं. फिर पुलिस ने आस-पास काम कर रहे मज़दूरों को लगाकर मोरंग हटवायी.

वैसे तो मैं क़ानून के अलावा किसी से डरता नहीं हूँ, और अन्यायी, अपराधी और गुंडे मवालियों से तो बिलकुल ही नहीं लेकिन सोचता हूँ कि जब पुलिस और □स टी □फ के लोग इस तरह क़ानून तोड़ने वाले, अराजक और अपराधी क़िस्म के मित्रों और रिश्तेदारों की मदद में आम जीवन जीने वालों का जीना हराम करने के लि□ बिना किसी सक्षम अधिकारी की अनुमति लि□, बिना किसी असाइनमेंट के गुंडों की तरह कहीं भी हमला करने लगेंगे तो हम जैसे आम और साधारण लोगों का जीवन कभी भी संकट में पड़ सकता है. (बाद में मैंने जानना चाहा कि वह सचमुच □स टी □फ वाला था या नहीं. फ़ेसबुक पर ढूँढा तो उसका प्रोफ़ाइल मिला, वह □स टी □फ से ही है, दो चित्र उस समय के हैं जब मेरे घर के सामने मोरंग पटा था और दो चित्र □स टी □फ वाले रणजीत राय के)

इस घटना के तुरंत बाद मैंने □सटी□फ के आईजी अमिताभ यश को □कपत्र भी भेजा, जो यहां दे रहा हूँ

Dear Amitabh Ji

Namskar,

I want to convey you an incident happened today on 10th June. We were out on tour and came

Written by मेरी बटियां संवाददाता
Monday, 11 June 2018 14:31

back on 8rth night. I was wonderstruck to see that someone poured a truck of sand in front of my house. It was placed in such a way that I could not move out of my house. I enquired and knew that it belongs to Mr Rakesh Tiwari. I told my problem to Mr Tiwari and asked him to remove sand in such a way that I can take my car out. When I saw him reluctant to do anything I complained police, police intervened and Rakesh Tiwari agreed to do the needful. But today he again showed no interest, I contacted police and police said me to use JCB to remove the sand. I was told to call police if needed.

I called JCB and when work started, Mr Tiwari's wife stood before JCB calling my names. She also phoned somewhere and dozen of hooligan looking people came, abused us, threatened and tried to manhandle me and my wife. There was an young man very furiously misbehaving and using threatening language. When I asked him who he is, almost challenging me to do whatever I can, he scolded me telling him an STF Inspector. He was using filthy and humiliating language incessently. I asked his name and he told me in scolding voice, main Ranjeet Rai hoon, STF men, Jo chaho kar lo. Really I felt fearful being a senior journalist, an editor and a senior citizen. I do not know in what capacity he came on D-1/109, Viraj Khand, Gomatinagar on 10th June 2018 between 3.15 to 4PM. Was he deputed or assigned any job or he was free to settle scores for his relatives anyway.

I have regards for upstf in my mind but Mr Ranjeet Rai like persons broke that. Please do the needful so that I feel better about your organisation.

Thanking u.

Subhash Rai

Editor, Jansandesh Times

D-1/109, Viraj Khand, Gomatinagar

Lucknow, 226010

Written by मेरी बटिया संवाददाता
Monday, 11 June 2018 14:31

Mo 8840427896

(I retrived Mr Ranjeet Rai photo from Facebook for easy to recognise him, photo attached)